ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

कला और शिक्षा

Dr. Ram Awadh
Assistant Professor
School of Education, CUSB, Gaya, Bihar

□□□□□□

वर्तमान माय से यदि हम भूतकाल के विषय में चर्चा करे तो कला का महत्वपूर्ण योगदान मिलाता है। कला किसी भी देश की संस्कृति का प्रतीक होता है। यह कला समाज में एक विशेष स्थान भी दिलाने में हमेशा सहायक होआ है। दुसरे शब्दों में कहे तो कला मनुष्य के अंतर्भाव को व्यक्त करती है। कला एक ऐसा माध्यम है जिसमे मनुष्य बिना पढे-लिखे एवम सुने बिना भी व्यक्त कर सकता। कला के द्वारा हम मनुष्य के अंतर्भावको भी जान सकते है। इस नश्वर पृथ्वी पर किसी को अगर सबसे बुध्धिमान होने का गौरव प्राप्त होआ हिया तो मनुष्य प्राणी को। मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रकृति से भी संघर्ष कर लेता है जब की आज इतना संसाधन होते होए भी प्रकृति को समझने की कोशिश ही कर रहा है। यह कोशिश मनुष्य जन्म से ही प्रारम्भ कर देता है जिसमे कला की भूमिका अतुलनीय है।

□□□□□ □□□□ – □□□, □□□□□□□□, □□□□□□, □□□□□□□□□, □□□□□□□□

□□□□□□□□□□

कला क्या है जब भी यह प्रश्न हमारे मन में उत्पन्न होता है या कोई व्यक्ति यह प्रश्न करता है तो स्वभाविकत: मन में हजारों प्रश्न जन्म लेने लगते है। तथाकथित तथ्यों की चर्चा करें तो यह पूरा संसार ही कलायुक्त है। जैसा की हम सभी जानते है कि इस नश्वर संसार में सृजन और अंत पुर्णत: सत्य है। यह संसार नश्वर होते होए भी इसमें नित्य नये नये सृजन होते रहते है। इसके साथ ही सृजनकर्ता एवं सृजन का अंत होना भी पुर्णत: सत्य है। कला ऐसे ही अविष्कार का एक भाग है जिसका सृजनकर्ता मनुष्य या अन्य जीव हो सकता है। यहाँ अन्य जीव का विश्लेषण इस लिए किया गया है कि आधुनिकता के इस युग में कला मनुष्यों तक सीमित न होकर जीव-जन्तुओं तक पहुँच चुकी है। इस आधुनिकता में कला का महत्त्व इतना बड गया है कि हाथी,बन्दर भी आज कला का सृजन कर रहे है इनके मन में कला का सृजन कैसे आता है, एक विचारणीय प्रश्न है। कला की व्याख्या अनेक व्याख्याताओं ने प्रतुत की है कोई किसी का समर्थन किया है तो कोई किसी के तथ्यों का खंडन।

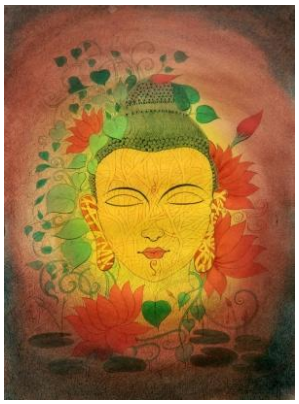

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार "कला में मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है" वही पश्यात दार्शनिक प्लेटो का कहना है कि " कला सत्य की अनुकृति है । लिओयोनार्दो द विन्ची के शब्दों में "कला कभी भी ख़त्म नहीं होती बस उसे त्याग ही जा सकता है "। हम आज भी कला की कोइ एक परिभाषा निश्चित नही कर पाये हैं । कला शब्द की उत्पत्ति कल् धातु से मानी गयी है । कला शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलाता है। तत्पश्चात कला शब्द का प्रयोग भारतमुनि द्वारा निर्मित नात्याशाश्त्र ग्रन्थ में मिलाता है। कला का विस्तृतवर्णन वत्स्यायन ने अपने ग्रन्थ कामसूत्र और शुक्रनीति में किया । कामसूत्र में ६४ कलाओं का वर्णन मिलाता है इन्ही ६४ कलाओं में ललित कला का वर्णन किया गया है । ललित कला को पांच भागों में विभाजित किया गया संगीत,काब्य,मूर्तिकला,चित्रकला और वास्तुकला ।उधाहरण स्वरुप यदि हम 30सेकंड में 2 किमी की दुरी तय करते है तो यह हमारी कला है । एक टाइपिस्ट 1 मिनट में 100शब्दों को लिख लेता है तो यह भी उसके हाथ की कला है । एक कार ड्राईवर 120 किमी /घंटा से कर चलता है और जब वह ब्रेक लगता है तो गाड़ी पलटने की वजय चार –पांच बार गुमने के बाद सीधी गाड़ी खड़ी हो जाती है यह भी एक कला है। ध्यान से एन सभी उधाहरण को देखे तो सभी लोग अपने काम में परिपूर्ण है, वो जो कर सकते है एक साधारण व्यक्ति कभी नही कर सकता है । ऐसे अनेको उधाहरण है जो किसी व्यक्ति विशेष की कला हैं । साधारण शब्दों में कहें तो कला एक एसी बहुमूल्य सम्पत्ति है जो होती तो सभी के पास है पर इसका आभास हर किसी को नहीं होता है।

वर्तमान माय से यदि हम भूतकाल के विषय में चर्चा करे तो कला का महत्वपूर्ण योगदान मिलाता है । कला किसी भी देश की संस्कृति का प्रतीक होता है । यह कला समाज में एक विशेष स्थान भी दिलाने में हमेशा सहायक होआ है । दुसरे शब्दों में कहे तो कला मनुष्य के अंतर्भाव को व्यक्त करती है । कला एक ऐसा माध्यम है जिसमे मनुष्य बिना पढे-लिखे एवम सुने बिना भी व्यक्त कर सकता। कला के द्वारा हम मनुष्य के अंतर्भावको भी जान सकते है । इस नश्वर पृथ्वी पर किसी को अगर सबसे बुध्धिमान होने का गौरव प्राप्त होआ हिया तो मनुष्य प्राणी को । मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रकृति से भी संघर्ष कर लेता है जब की आज इतना संसाधन होते होए भी प्रकृति को समझने की कोशिश ही कर रहा है । यह कोशिश मनुष्य जन्म से ही प्रारम्भ कर देता है जिसमे कला की

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

भूमिका अतुलनीय है। आज के इस परिवेश में जितना हम विकाश करते है उतना ही कला के वातावरण में बंधाते चले जाते है। हम चाह कर भी इस परिवेश से अपने आप को मुक्त नहीं करा सकते। भारतीय कला के भरे में यदि हम चर्चा करे साथ ही यह सोचे कि क्या यह कला किसी भी तरह शिक्षण के क्षेत्र में सहायक सिद्ध होगी। भारतीय कला में अजंता, एलोरा, साँची का स्तूप, लुखिनिया दरी, बनारस के घाट, कोरार्ण का सूर्य मंदिर, एलिफेंटा की गुफाये, नालंदा विश्वविद्यालय विश्व इत्यादी प्रशिद्ध है। यदि विश्व में कही शिक्षाम थी, भारत का नाम आज भी गौरवपूर्ण तरीके से लिया जाता है। आज के परिवेश में नालंदा सिर्फ वीरान ईटों का शहर ही शेष रह गया है। आज हम इसी वीरान इतो के साक्छ के आधार पर यह कह सकते है की उस समय विश्विख्यात नालंदा का नक्शा कैसा रहा होगा। नालंदा पूरी तरह नष्ट होते होए भी आज अपनी शैक्षणिक कला के लिए पूरी दुनिया में प्रशिद्ध है। इससे भी हम यह अनुमान लगा सकते है कि कला शैक्षिक महत्त्व के लिए भी प्रशिद्ध हैं।

आधुनिक कला और शिक्षा

आधुनिकता के इस दौर में हर क्षेत्र में परिवर्तन होआ चाहे वह भूगोल, खगोल, अर्थ, सामाजिक इत्यादी। ऐसे बदलाव की प्रक्रिया में भला कला कैसे पीछे रह सकती थी। इस विकाश में शिक्षा के साथ कला का योगदान सराह निय है। शिक्षा के शैक्षिक महत्त्व में कला

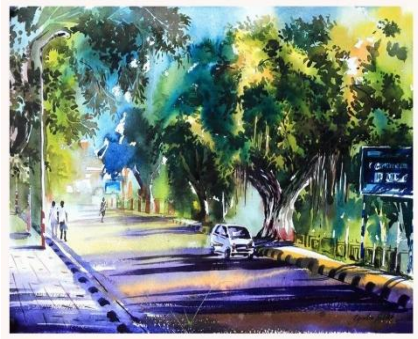

का योगदान परोक्ष या अपरोक्ष दोनों तरह से होता है साधारण शब्दों में कहे तो शैक्षिक महत्त्व की तीन महत्त्व पूर्ण विधिया है विडियो,आडियो,दृश्यकला। इन तीन विधियों से शिक्षण को सुव्यवस्थित त्ररिके से पढ़ा सकते है। कला का प्रयोग मनुष्य आदि काल से ही करता चला आ रहा है। जिसका प्रमाण हमें सिन्धु घाटी,हड़प्पा, लिखुनिया, अजंता, लास्को की गुफाये इत्यादी से पता चलता है। कला का प्रयोग मानव ने सर्वप्रथम जब किसी भूलवश या जानान्य में किया होगा उसको ये नहीं पता था की सबसे बुद्धिमान मानव इससे अछूता नहीं रह पायेगा। इसके साथ ही यह मनुष्य के विकाश में इतना सहयोगी होगी इसकी तो कल्पना भी नही की होगी। आज भी हम किसी सभ्यता या देश की संस्कृति के बारे में जानना है तो पहले उस सभ्यता या देश के कलाकृतियों को ढूढॉ जाता है। ये कलाकृतिया, मोहरों, मकानों के नक्क्शो कपड़ो या किसी अन्य वस्तुओं में भी पाये जा सकते है।

कभी-कभी हमारे मन में यह भी प्रश्न उठता है की क्या हम जो भी कलाए करते है वः सभी कला शिक्षा है या पढने के उद्द्येश्य से

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

कलाओं को बाँट दिया है। क्या कला और फाइन आर्ट कला दोनों ही शैक्षिक महत्त्व समान है या दोनों का अलग, यह एक विचारणीय प्रश्न है। आज भी जनजातीय के लोग अपना घर को सजाने के लिए मिटटी के घरो में गोबर का लेप लगाते है। आज भी चुने खडियो रंगों का शुभ अवसरों पर प्रयोग किया जाता है। इसके साथ ही आज के मशीनीकरण के दौर में हम लाइट पेंट,पोस्टरों इत्यादी सामानों का प्रयोग करते है। क्या यह दोनों विधि ही फाइन आर्ट है? क्या ये तकनीक हमारे शिक्षण के लिए सही है। यदि मशीनीकरण तकनीक सही है तो हम अपने आने वाले समय में अपनी मोलाभुत संस्कृति को भूल ही जायेंगे। भविष्य की आने वाली पिढीयो में तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। जैसा की हम जानते है की कला संस्कृति का ही रूप है। जहा संस्कृति नहीं वहा कला नहीं ,जहा ये दोनों नहीं होंगे वहा मानव शिक्षित कैसे होगा। फिर एक दौर फिर चलेगा जिसे आज हम आदिमानव कहते हैं। शिक्षाके समस्त कलात्मक रूपों का निर्माण या आरम्भ ज्ञान से ही होता है।

शिक्षा की कलात्मक विधि को देखने हेतु एक दृष्टि सौन्दर्य प्रदान करती है। इसी तरह विज्ञानं भी वस्तुओं का विश्लेषण करके सामान्य नियमो का प्रतिपादन करती है। यह केवल विश्लेषण छोर देता है। उसके आधार पर रूपों का निर्माण करना कला के क्षेत्र के अंतर्गत आता है। इस प्रकार विज्ञानं जिस सत्य की व्याख्या करता है, कला उसे चातुष रूप प्रदान करती हैं।

"Art is representation, Science the explanation of the same reality."

– Hearbert Read

शिक्षा का लक्ष्य मष्तिष्क का विकास करना है। यह तभी संभव है जब हम अपनी शिक्षा में कला का प्रयोग करे, बालको की कला में सहजता एवं भोलापन दिखता है। बच्चों की ऐसी कला को विकशित करने हेतु सही शिक्षा प्रदान करना एक शिक्षक का उत्तर दायित्व बनता है। वर्त्तमान या आधुनिकता शिक्षा की अभिव्यक्ति की बात करे तो कला, कल्पना के गुण पर अधिक बल देती है। विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम में वास्तव में जीवन के इतने निकट कोई अन्य विषय नहीं है। जब हम कला की बात करते तो एक छोटा बालक जब जब अपने मन में उत्पन्न भावों को किसी कागज या धरातल पे किसी तुलिका,पेन या पेंसिल के माध्यम से व्यक्त करता है तो उस टूटी फुटी रेखा में उसके न जाने कितने भावों का समावेश छुपा रहता है। एक कलाकार इसी भावों को समझता है और उसी के अनुसार हमेशा उसी के अनुरूप उसे शिक्षित करता है। प्रमाणों के आधार पे यदि हम कला की चर्चा करें तो सर्वप्रथम इसका निर्माण मनुष्यों द्वारा गुफाओं में हुआ। समयारूप मनुष्य कब इसके विस्तृत रूप में समां गया उसको पता ही नहीं चला। वर्त्तमान समय में इसका इतना महत्त्व हो गया है की इसके बिना मनुष्य शिक्षा प्राप्त कर ही नहीं सकता। वर्तमान वैज्ञानिक युग है,इस वैज्ञानिक युग में भी आज शिक्षा का प्रारम्भ कला स्तर से ही होता है, सांस्कृतिक कला

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

विरासत को जिवंत रखने में आज भी ग्रामीण समुदाय का अतुलनीय योगदान है मधुबनी, मिथिला, कालीघाट,वर्ली एसे अनकों गाँव है।

शिक्षा के क्षेत्र में कलाओं का महत्वपूर्ण युगदान है ।

चित्रकला कलाओं में श्रेष्ठ-कला है । मनुष्य जन्म से ही अनुकरण की प्रवृत्ति रखता है। जैसा देखता है उसी प्रकार अपने को ढालने का प्रयत्न करता है। यही उसकी आत्माभिव्यंजना है। रंगों से भरी तूलिका से चित्रकार जन भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है तो दर्शक हतप्रभ रह जाता है। पाषाण युग से वर्तमान समय तक जो चित्र प्राप्त होते रहे हैं ये मात्र एक विधा नहींए अपितू ये मानवता के समृधि विकास का एक निश्चित सोपान प्रस्तुत करते हैं। गुफाओ से प्राप्त चित्रों के माध्यम से आखेट करने वाले आदिमानव ने न केवल अपने संवेगों को बल्कि रहस्यमय प्रवृत्ति और जंगल के खूंखार प्रवासियों के विरुद्ध अपने अस्तित्व के लिए किए गए संघर्ष को भी अभिव्यक्त किया है। धीरे-धीरे चित्रकला और सोपान चढ़ी। सिन्धुघाटी सभ्यता में पाए गए चित्रों में पशु-पक्षी मानवआकृति सुन्दर प्रतिमाएंए ज्यादा नमूने भारत की आदिसभ्यता की कलाप्रियता का द्योतक है।इसी प्रकार विश्व में पत्थर के टुकड़े को विभिन्न तकनीकों से विभिन्न प्रयोजनों के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता था। हस्तकुल्हड़ेए खुरचनीए छिद्रकए तक्षिणियाँ तथा बेधक आदि पाषाण-उपकरण सिर्फ़ उपयोगिता की दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण नहीं थेए बल्कि उनका कलात्मक पक्ष भी ज्ञातव्य है। जैसे-जैसे मनुष्य सभ्य होता गया उसकी जीवन शैली के साथ-साथ उसका कला पक्ष भी मज़बूत होता गया। जहाँ पर एक ओर मृदभांण्डए भवन तथा अन्य उपयोगी सामानों के निर्माण में वृद्धि हुई वहीं पर दूसरी ओर आभूषण मूर्ति कला मुहर निर्माण गुफ़ा चित्रकारी आदि का भी विकास होता गया। कल्पनाशील सोच-विचार को शायद एक दक्षता न माना जाता हो लेकिन यह अधिकतर कलात्मक दक्षताओं से भी अधिक आधारभूत है। छोटी कक्षाओं में यह सिखाना बहुत मुश्किल है।

कला के संसार में कल्पना की अलग ही उड़ान होती है और इस संसार में प्रवेश कर पाना आसान नहीं है। कला-शिक्षण के शुरुआत में सम्भव है कि किसी शिक्षक ने कोई आकृति बनाने या उसे रंगों से भरने या फिर सीधी लकीरें खींचने के लिए कहा हो। कभी-कभी बच्चे ऐसा करने में बोरियत महसूस करते हैं और कला की कक्षाओं में उनकी दिलचस्पी घटने

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

लगती है। मैं आमतौर पर उन्हें कोई रंग-बिरंगा दृश्यचित्र बनाने को देता हूँए या फिर जानवरों या किसी इन्सान की हल्की-फुलकी हंसी भरी तसवीरए तितलियाँ और चित्रकारी आदि। यदि यह उनका खुद का चुनाव होगा तो अधिक सम्भावना है कि वे इस पर मेहनत करेंगे। कभी-कभी वे शिल्प कार्य भी करते हैं। मैंने पाया है कि उन्हें इस गतिविधि में अमूमन अधिक मजा आता है।

आमतौर पर कक्षा 6 से कक्षा 8 तक के बच्चों को जो वे करना चाहते हैं उसके चुनाव को छूट दी जाती है। कुछ दिलचस्पी लेते हैं और कुछ नहीं। बेहतर है कि विद्यार्थियों को ऐसा काम न दिया जाए जिसके लिए वे तैयार न हों। मेरी कोशिश विभिन्न विषयों पर कुछ विचार उन तक पहुँचाने की रहती है जिन्हें वे अपनी स्केच-बुक में प्रयोग कर सकें। वे बहुत अच्छा प्रदर्शन न कर रहे हों तब भी मैं उन्हें प्रोत्साहित करता हूँ। विद्यार्थी विचारों को अपना लेते हैं तो कुछ करने की इच्छा और प्रेरणा सबसे सशक्त होते हैं। यानी किए गए महत्वपूर्ण चुनाव में उनका दखल होना चाहिए। चुनाव वे स्वयं करेंगे तो काम भी बेहतर करेंगे। साथ ही यह कला और कला शिक्षा की अवधारणाओंको भी स्पष्ट करता है। संस्कृति का मूल आधार लोक परम्पराओ की सृजनात्मकता में दिखाई देती है। हार्दिक भावनाओ के आधार पर सौन्दर्य की पुत्री के रूप में संवेदनाओ को उकेरती लोक कला-चित्रण का अवलोकन करती है। लोक गीत हो चाहे ,लोक नृत्य , लोक – साहित्य हो चाहे ,लोक साहित्य हो चाहे , लोक शिल्प कला सदा उसका केंद्र बिंदु होती है। जीवन को जीवन सामान्य मुल्यु से युक्त चित्रण विभिन्न लोक संस्कृति से प्राप्त होता है।

पारम्परिक लोक कला

पारंपरिक लोक कला के रचनाकारो की रचना समय का अवलोकन प्रचलित लोक ग्राम्यो से ही नहीं प्राप्त होता है परन्तु वर्ण विषय एवं लोक चित्र मनोभावों का कोमल चित्रण उस समय की प्रचलित सामाजिक एवं लोकजीवन की मान्यता को अवश्य संकेत करता है। सामाजिक जीवन की खुशियों त्युहारो ऋतुओ आपसी पारिवारिक संबंधो को प्ग्रद करती है। लोक जीवन हमरे राष्ट्र की आधार शिला है। और इस लोक जीवन का मर्म ही तो लोक कलाओ ,संगीतो ,चित्रों में प्रकट होता है। लोक कला सामान्य जनजीवन के स्वाभाविक मन चेतना के आवगत उद्गारो के लयबद्ध प्रकाश पुंज है। जो उसकी सभ्यता एवं संस्कृति की सहजता एवं स्वाभाविकता का बोध करती है अर्थात लोक कला में लोक जीवन के दार्शनिक आध्यात्मिक एवं लोक व्यव्हार सम्बन्धी विचार धाराओ तथा व्यापारों की पर्याप्त झलक मिलाती है। लोक संस्कृति का सुन्दरतम प्रतिबिम्ब लोक संगीत और लोक कला में सर्वत्र दिखाई देता है। क्योकि लोक कला में लोक से सम्बंधित चित्रों का प्रारूप हमेशा दिखाई देता है। लोक चित्रण जागृति निर्माण करता है। जो जीवन के प्रति उच्चतर मूल्य है।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 12 June 2020

उन्हें जागृत करता है। प्रचार- प्रसार में भावों को उद्दीपन करने के लिये चित्रों की प्रेरक शक्ति का उपयोग किया जाता है। सुप्त गुणों का आहवाहन भी लोक चित्रों द्वारा ही किया जाता हैं।

संदर्भ :

1 समकालीन भारतीय कला डा0 ममता चतुर्वेदी राजस्थान हिन्दी गंरथ अकादमी।
2 भारत की समकालीन कला प्राण नाथ मागोए नई दिल्ली।
3 ललीत कला अकादमीए उ0प्र0 अंक 36
4 मुक्ति प्रसंगए राज कमल चैधरीए पृ0 27.29
5 आधुनिकता के रचना संदर्भ– डा0 भगवान दास वर्माए 2007ए पृ0 99
6. Viktor Vijay Kumar, Monalisa does not smile anymore, Gallery Studio Vasant, 2011
7. Manohar Sinha, Ajanta Caves, Archaeological Survey of India, 2010
8. ललित कला शिक्षणए अन्जू बेघलए राखी प्रकाशन 2016
9. Lois Hetland, Studio Thinking, Teachers Collage Press, 2013
10. www.fineart.pedagogy, teaching style
11. https://www.scotbuzz.org/2019/05/kla-shiksha-kya-hai.html
12. http://www.teachersofindia.org/hi/article
13. https://www.scotbuzz.org › 2019/05

 Copyright © 2020 Authors